॥ श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ॥



॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

श्रीरामस्तवावली



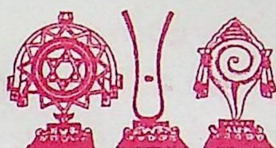
ग्रन्थ प्रणेता

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री "श्रीजी" महाराज

* श्रीसर्वेश्वरो जयति *



॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

श्रीरामस्तवावली

रचयिताः--

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री ''श्रीजी'' महाराज

प्रकाशक--

विद्वत्परिषद्

अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ

सलेमाबाद, पुष्करक्षेत्र जि. अजमेर (राज०)

श्रीरामजयन्ती महोत्सव

वि० सं० २०६५ श्रीनिम्बार्काब्द [illegible]

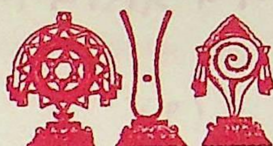
पुस्तक प्राप्ति स्थान--
अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

प्रथमावृत्ति--२०००

मुद्रक--
श्रीनिम्बार्क - मुद्रणालय
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

न्यौछावर
पाँच रुपये

* श्रीसर्वेश्वरो जयति *



॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

मङ्गलाचरणम्

(१)

सर्वेश्वरप्रभुं वन्दे राधामाधवरूपिणम् ।
आद्याचार्यञ्च निम्बार्कं सम्प्रदायप्रवर्तकम् ॥

(२)

श्रीमत्परशुरामञ्च देवाचार्यं जगद्गुरुम् ।
अस्मद्गुरुं हृदा नौमि शरण्यं दीनवत्सलम् ॥

(३)

प्रणम्य मनसा वाचा पूर्वाचार्यान्कृपाकरान् ।
''रामस्तवावली'' चारु तन्यते सर्वसौख्यदा ॥

श्रीरामचन्द्राराधनम्

(१)

नमामि रामचन्द्रश्च श्रुतिशास्त्रेषु वर्णितम् ।
अयोध्यावासिनं सेव्यं सुरवृन्दादिवन्दितम् ।।

(२)

हनुमता सदाऽऽराध्यं परं ब्रह्म सनातनम् ।
कृपादयाऽऽर्द्रचित्तश्च नित्यं नमामि राघवम् ।।

(३)

कनकमौलिनं वन्दे दिव्यकुण्डलधारिणम् ।
प्रवालमालया रम्यं रामं चन्दनचर्चितम् ।।

(४)

सर्वदा मनसा ध्येयं जानकीवल्लभं प्रभुम् ।
अनन्तकरुणासिन्धुं प्रणमामि पुनः पुनः ।।

* श्रीसर्वेश्वरो जयति *

॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

समर्पणम्

सीतारामप्रभोरङ्घ्रिपङ्कजेषु समर्प्यते ।
'रामस्तवावली' चारु भक्ताऽऽमोदप्रदायिनी ॥

मिति – चैत्र शुक्ल १० गुरुवार
श्रीराम जयन्ती महोत्सव
वि० सं० २०६७
दिनांक – २५/३/२०१०

समर्पकः-
श्रीसीतारामपदपङ्कजपरागकामः–
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यः
अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)
पुष्करक्षेत्र, किशनगढ, अजमेर (राज०)

॥ श्रीसर्वेश्वरो जयति ॥

स्वीयभावाभिमत

यथार्थ में स्तवों द्वारा अपने परमाराध्य सर्वेश्वर श्रीराधामाधव की आराधना की जाय तो यह सर्वोत्तम साधन सर्वसुखदायी एवं शास्त्र सम्मत है। महारास लीला के क्रम में जब वृन्दावनविहारी भगवान् श्रीकृष्ण अन्तर्धान होगये तो उस दुस्सह अवस्था में समस्त व्रजगोपीजनों ने "श्रीगोपीगीत" के रूप में अपने हृदयधन श्रीकृष्ण भगवान् की आराधना कर उन्हें पुनः प्रकट होने को बाध्य कर दिया उसी "श्रीगोपीगीत" के इस श्लोक से कितना हृदयग्राही परिवर्णन किया गया है--

तव कथामृतं तप्तजीवनं कविभिरीडितं कल्मषापहम्।
श्रवणमङ्गलं श्रीमदाततं भुवि गृणन्ति ते भूरिदा जनाः ॥

वस्तुतः ऐसी ही हृदय की भाव भरित अभ्यर्थना को श्रवण कर परम कृपाकरुणार्णव सर्वेश्वर श्रीकृष्ण भगवान् पुनः महारास के लिए उद्यत हो गये। अतः स्तवों द्वारा अपने उपास्य की उपासना नितान्त फलप्रद है। यहाँ प्रस्तुत इस "श्रीरामस्तवावली" ग्रन्थ में मर्यादा पुरुषोत्तम राजीवलोचन नयनाभिरराम भगवान् श्रीराम की वन्दना की गई है। यद्यपि उपासना भेद से उभय श्रीभगवत्स्वरूपों में विभेद दृग्गोचर होता है किन्तु परब्रह्म दृष्ट्या तत्त्वतः एक ही स्वरूप हैं।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर परमाचार्यप्रवर श्रीमत्परशुरामदेवाचार्यजी महाराज ने अपने ''श्रीपरशुरामसागर'' वृहद् ग्रन्थ में--

रामकृष्ण में ''परशुराँ'', कीजै नहीं विवेक।
काष्ठ या कि पाषाण मथि, पावक को गुन एक।।
राम कृष्ण हरि नाम में, भेद अभेद न कोय।
पार करण को ''परशुराँ'', पोत भये प्रभु सोय।।

इसी प्रकार आपसे पूर्ववर्ती एवं परवर्ती पूर्वाचार्यप्रवरों ने भी अपने-अपने ग्रन्थों में इसी आशय का भाव व्यक्त किया है अतः प्रस्तुत यह लघुस्वरूप ''श्रीरामस्तवावली'' ग्रन्थ भी उसी सरणि का अनुसरण है। महामनीषीजन सन्त-महात्मा महानुभावों एवं परम श्रद्धालु रसिक भावुक भक्तों ने यदि इस ''श्रीरामस्तवावली'' का मनन किया तो ग्रन्थ की उपादेयता सार्थक होगी।

मिति - चैत्र शुक्ल १० गुरुवार
श्रीराम जयन्ती महोत्सव
वि० सं० २०६७
दिनांक - २५/३/२०१०

--श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्रीरामचन्द्राष्टकस्तवः

(१)

विधीशेन्द्रदेवैः समाराध्यमानं
मुनीन्द्रादिवन्द्यं कपीशप्रपूज्यम् ।
पुराणादिशास्त्रैः सदा गीयमानं
भजे रामचन्द्रं परब्रह्मरूपम् ।।

इस समस्त जगत् के रचयिता श्रीब्रह्मा एवं आशुतोष चन्द्रमौलि श्रीशंकर तथा इन्द्रादि देव समूह से समाराधित और ऋषि-मुनिजनों द्वारा अभिवन्दित, पवनतनय श्रीहनुमान्जी से सदा परिपूजित समस्त पुराण-रामायणादि शास्त्र जिन प्रभु के स्वरूप का प्रतिपल गान अर्थात् निरूपण करते हैं ऐसे परब्रह्म स्वरूप भगवान् श्रीरामचन्द्र का आराधनपूर्वक भजन करते हैं।

(२)

असीमप्रभावं सदाचापहस्तं
वशिष्ठाऽऽप्तशिक्षं महोदार्यसिन्धुम् ।
नराकाररूपं प्रियाऽपाङ्गभालं
भजे रामचन्द्रं परब्रह्मरूपम् ।।

जिनका अतुलित प्रभाव है और जिनके करकमलों में सर्वदा धनुष सुशोभित है एवं ब्रह्मर्षिवरेण्य श्रीवशिष्ठजी द्वारा सर्वविध शिक्षा प्राप्त की है। उदारता में सिन्धु स्वरूप हैं तथा जिनके सुन्दर ललाट पर ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक अतिशय सुन्दर है, मानवरूप में परम

सुभग परब्रह्म स्वरूप भगवान् श्रीरामचन्द्र का भजन स्मरण करते हैं।

(३)

अयोध्यानरेशं महाराजराजं
रमारूपसीतासुरक्षार्थसज्जम् ।
अहो दिव्यहर्म्ये मुदा राजमानं
भजे रामचन्द्रं परब्रह्मरूपम् ।।

समस्त महाराजों के राजारूप अयोध्या के नरेश लक्ष्मी-स्वरूपा जनकनन्दनी श्रीसीताजी की सर्वविधरूप सुरक्षार्थ सदा सर्वदा सुसज्जित रहने वाले साश्चर्य अपने दिव्य महल में राजसिंहासन पर प्रमुदित मनस्क विराजमान परब्रह्मरूप भगवान् श्रीरामचन्द्र का मनसा-वाचा-कर्मणा भजन करते हैं।

(४)

सुदीनाऽऽर्तसेवाविधानप्रवीणं
नवाऽम्भोजवृन्दासुमाल्याऽञ्चिताऽङ्गम् ।
शरण्यं वरेण्यं प्रियेशं परेशं
भजे रामचन्द्रं परब्रह्मरूपम् ।।

जो अतिशय दीन एवं दुःखीजन हैं उनकी सभी प्रकार से परिचर्या-सेवा सम्पादन में परम कुशल हैं। नव विकसित कमल एवं तुलसी की माला से प्रपूजित परम शोभायमान मङ्गलमय श्रीवपु है, जो शरणागतजनों के एकमात्र आधार हैं तथा अतिवरणीय अपनी प्रिया श्रीजानकीजी के परम प्रियतम है जो परमेश्वर परब्रह्मरूप श्रीरामचन्द्र प्रभु का भजन करते हैं।

(५)

शुभे चित्रकूटे लताशाखिरम्ये
प्रपाताम्बुघोषाऽपगागुञ्जमाने ।
व्रजन्तं महारण्यमार्गे नरेन्द्रं
भजे रामचन्द्रं परब्रह्मरूपम् ।।

विविध लताओं नाना दर्शनीय वृक्षों से परम रमणीय पर्वतीय झरनों के जल गिरने की ध्वनि से तथा मन्दाकिनी आदि पुण्य सलिला सरिताओं के धारा गुञ्जार से आह्लाददायक गहन वन प्रदेश में पधारते हुए परब्रह्म भगवान् श्रीरामचन्द्र का प्रतिपल भजन करते हैं।

(६)

अहो गुप्तगोदावरीदिव्यतीरे
मुदाऽटाट्यमानं नवाम्भोजनेत्रम् ।
शुभे सुप्रभाते सुमञ्जुस्वरूपं
भजे रामचन्द्रं परब्रह्मरूपम् ।।

अत्यन्त आश्चर्यजनक गुप्त गोदावरी के अतीय सुरम्य तटीय प्रदेश में मङ्गलमय प्रभातवेला में राजीवलोचन सुभग स्वरूप अति प्रसन्नता पूर्वक पधारते हुए परब्रह्मरूप भगवान् श्रीरामचन्द्र का सश्रद्ध भजन करते हैं।

(७)

हृदा सद्भिरचर्यं पराभक्तिलभ्यं
[illegible]पं सदाशान्तिधाम ।

महानन्दसिन्धुं कृपावृष्टिकारं
भजे रामचन्द्रं परब्रह्मरूपम् ।।

आप्तकाम पूर्णकाम अमलात्मा महात्माओं के अन्तःकरण से समर्चनीय, अति विमल परमोत्तम पराभक्ति के द्वारा जिनका सुन्दर दर्शनों का परम लाभ होता है एवं अत्यन्त सुन्दर स्वरूप, सर्वदा शान्ति के अगाध धामरूप तथाच अपनी अहैतुकी कृपा की वर्षा करने वाले परमानन्द सागर परब्रह्मस्वरूप श्रीरामचन्द्र भगवान् का अनुदिन भजन करते हैं।

(८)

मुनीन्द्रादिवन्द्यं सुधीहार्दसेव्यं
भवाऽम्भोधिव्याधिप्रणाशे प्रवीणम् ।
अयोध्याऽऽलिपूज्यं गुणीवाद्यगेयं
भजे रामचन्द्रं परब्रह्मरूपम् ।।

ऋषि-मुनिवरों द्वारा अभिवन्दित, विद्वज्जनों के अन्तर्मानस से सदा परिसेवित, संसार रूपी सागर की यह महाव्याधि इसके परिशमन में परम कुशल और अयोध्या वास्तव्य नारिजनों द्वारा प्रतिपल पूजनीय एवं गुणीजनों के विविध वाद्यवृन्दों से जिनका गुणगान किया जाता है ऐसे परब्रह्म स्वरूप श्रीरामचन्द्र भगवान् का अपने हृदय से भजन करते हैं।

(९)

रामभक्तिप्रदश्चारु रामचन्द्राष्टकः स्तवः ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितः ।।

श्रीरामचन्द्र भगवान् की विमल भक्ति प्रदान करने वाला अति सुन्दर यह श्रीरामचन्द्राष्टकस्तव जिसकी रचना इन्हीं श्रीप्रभु प्रेरणा और कृपा का प्रसाद स्वरूप यहाँ प्रस्तुत है।

श्रीरामपञ्चश्लोकी

(१)

रामं रमेशं रमणीयरूपं
श्रीजानकीजीवनमाप्तमृग्यम्।
कपीशपूज्यं मुनिवृन्दसेव्यं
श्रीराघवेन्द्रं शरणं प्रपद्ये ।।

लक्ष्मीस्वरूपा श्रीसीताजी के परम स्वामी एवं उन श्रीजानकीजी के जीवनाधार अति रमणीयस्वरूप उत्तमोत्तम महापुरुषों द्वारा जिनका अन्वेषण किया जारहा है तथा ऋषि-मुनिजनों द्वारा संसेवित श्रीहनुमान्‌जी द्वारा जिनकी अर्चना की जाती है ऐसे राघवेन्द्र भगवान् श्रीराम के सर्वात्मना शरण हैं।

(२)

सीतापतिं श्रीभरताग्रजञ्च
सुरेन्द्र-गन्धर्वसुगीयमानम्।
वेदादितन्त्रागमनित्यगेयं
श्रीराघवेन्द्रं शरणं प्रपद्ये ।।

श्रीजानकीजी के अधिपतिस्वरूप अपने अनुज श्रीभरतजी के ज्येष्ठ भ्राता एवं इन्द्र-गन्धर्वादि देववृन्दों द्वारा जिनके परम मनोहारी स्वरूप का गान किया जाता है। इसी प्रकार समस्त वेद-तन्त्र-पुराण-रामायणादि शास्त्रों द्वारा जिनके दिव्य गुणगणों का परिवर्णन किया जाता है ऐसे राघवेन्द्र भगवान् श्रीराम के सर्वविध रूप से प्रपन्न अर्थात् शरणापन्न हैं।

(३)

परिभ्रमन्तं सरयूप्रतीरे
सद्भिः सुधीभिः सह सेवकैश्च ।
श्रीरामभद्रं तिलकाङ्किताङ्गं
श्रीराघवेन्द्रं शरणं प्रपद्ये ।।

सर्वोत्तम सन्त महात्माओं विद्वज्जनों तथा निज परिचर्या परायण सेवकजनों के साथ पुण्यतोया मङ्गलमयी सरिता श्रीसरयू के तट प्रदेश में परिभ्रमण शील, द्वादश तिलकों से अति कमनीय जिनका श्रीवपु है ऐसे रामभद्र राघवेन्द्र भगवान् श्रीराम के अपने अन्तर्हृदय से शरणागत हैं।

(४)

आचारवन्तं सुसरोजनेत्रं
निजाऽनुजाऽऽसन्नविराजमानम् ।
मन्दस्मितास्यं मणिमाल्यशोभं
श्रीराघवेन्द्रं शरणं प्रपद्ये ।।

वेदादिशास्त्रविहित सदाचार परायण, राजीवलोचन मणियों

की दिव्य माला को धारण किये हुए मन्दस्मित जिनका श्रीमुखारविन्द है। अपने अनुज श्रीभरत-लक्ष्मण-शत्रुघ्न सहित विराजित अतिशोभायमान हैं ऐसे राघवेन्द्र भगवान् श्रीराम के अनुगत अर्थात् परम शरण हैं।

(५)

अम्भोजमाल्याश्रितमञ्जुरूपं
प्रातर्व्रजन्तं स्वकधाम्नि रामम्।
वेदज्ञविप्रैः सह लक्ष्मणेन
श्रीराघवेन्द्रं शरणं प्रपद्ये ॥

कमल पुष्प की मालाओं से जिनका सुन्दर दर्शनीय स्वरूप है और वैदिक विद्वानों तथा अपने भ्राता श्रीलक्ष्मणजी के संग अपने अयोध्या धाम में प्रभात के समय पधारते हुए श्रीराघवेन्द्र प्रभु श्रीराम के पूर्णतया शरण हैं।

(६)

श्रीरामपञ्चकश्लोकी रामानुरागसम्प्रदा।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मिता ॥

भगवान् श्रीराम के प्रति अनन्य अनुरागपूर्ण पराभक्ति प्रदान करने वाली यह "श्रीरामपञ्चकश्लोकी" जिसका प्रणयन उन्हीं प्रभु श्रीराम की कृपा का प्रसाद है।

श्रीरामविंशतिः

(१)

श्रीरामं राघवं वन्दे सीतया सह नित्यदा।
हेमसिंहासनासीनं भ्रातृभिः परिसेवितम्॥

अपने अनुज भ्राता श्रीभरत-लक्ष्मण-शत्रुघ्न के द्वारा परिसेवित एवं जगज्जननी जनकसुता श्रीसीताजी के संग सर्वदा सुवर्ण के सिंहासन पर विराजित राघव भगवान् श्रीराम की अभिवन्दना करते हैं।

(२)

अयोध्यावासिभिः सर्वै-राराध्यं भावुकै-र्जनैः।
सीतारामं सदा वन्दे देववृन्दाभिवन्दितम्॥

सतत अयोध्यापुरी में निवास करने वाले सभी भावुक भगवज्जनों द्वारा अविरल रूपेण परम आराधनीय एवं समस्त देववृन्दों द्वारा अभिवन्दित भगवान् श्रीसीताराम की वन्दना करते हैं।

(३)

मल्लिकापुष्पमाल्येन शोभितं रघुनन्दनम्।
नमामि शिरसा वाचा मनसा श्रद्धया सदा॥

मोगरा किंवा जुही के अति सुगन्धित पुष्पों की माला से अति सुशोभित रघुनन्दन भगवान् श्रीराम को श्रद्धापूर्वक मन-वाणी से सदा-सर्वदा साष्टाङ्गपूर्वक अपने शिर से अभिनमन करते हैं।

(४)

नवीननीरदश्यामं दिव्यचापकराम्बुजम् ।
स्वान्ते स्मरामि देवेशं श्रीरामं जानकीप्रियम् ।।

नवीन मेघ के सदृश श्यामल स्वरूप एवं जिनके करकमलों में धनुष-वाण सुशोभित हैं ऐसे जनकसुता के अतिप्रिय समग्र देवताओं के अधीश्वर भगवान् श्रीराम का अपने चित्त से सदा स्मरण करते हैं।

(५)

मृदुवपुश्च गम्भीरं सरयूपुलिने स्थितम् ।
कराब्जकमलं रामं जानकीजीवनं भजे ।।

जिनका श्रीवपु अतीव कोमल है और सर्वदा अतीव गम्भीर मुद्रा में रहते हैं तथा परम पुण्य सलिला सरिता श्रीसरयू की पवित्र पुलिन पर विराजित रहते हैं। जिनके हस्तारविन्द में कमल पुष्प शोभित हो रहा हैं ऐसे जानकी जीवन भगवान् श्रीराम उनका भजन करना ही परम कर्तव्य है।

(६)

असीमकरुणासिन्धुं परब्रह्म सनातनम् ।
हनुमता हृदा सेव्यं सीतारामं नमाम्यहम् ।।

जो करुणा के अगाध सागर स्वरूप हैं, महाबली अनन्य भक्त श्रीहनुमान्जी के अन्तःकरण से सदा सेवित हैं एवंविध परम सनातन परब्रह्म स्वरूप भगवान् श्रीराम को अभिनमन करते हैं।

(७)

श्रुति-तन्त्र-पुराणाद्यै-र्नानारामायणादिकैः ।
शास्त्रैर्निरूपितं रामं प्रणमामि परात्परम् ।।

श्रुति-तन्त्र-पुराण एवं विविध रामायणों आदि शास्त्रों में जिनके दिव्यतम स्वरूप का परिवर्णन प्रतिपादन हुआ है ऐसे परात्पर भगवान् श्रीराम को सर्वात्मना प्रणाम करते हैं।

(८)

ब्रह्मेन्द्ररुद्रदेवैश्च समाराध्यं सभक्तिकम् ।
कौशल्यानन्दनं रामं स्मरामि निजमानसे ।।

श्रीब्रह्मदेव, इन्द्रदेव, आशुतोष भगवान् श्रीशंकर आदि देववृन्दों के द्वारा सर्वदा जिनकी आराधना भक्ति पूर्वक की जाती है ऐसे कौशल्यानन्दन भगवान् श्रीराम का अपने चित्त से सदा स्मरण करते हैं।

(९)

श्रीमद्दाशरथिं रामं जानकीवल्लभं हृदा ।
स्मरामि सर्वदा स्वान्ते शरण्यं भक्तवत्सलम् ।।

जो परम भक्तवत्सल हैं जनकसुता श्रीजानकी के प्रियतम हैं ऐसे परम शरणीय दशरथनन्दन भगवान् श्रीराम को सब समय अपने हृदय से स्मरण करते हैं।

(१०)

कनकमौलिनं रामं रत्नकुण्डलशोभितम् ।

कृपापयोधिसद्रूपं भावये वाञ्छितप्रदम् ।।

स्वर्ण मुकुट धारण किये विविध रत्नमण्डित कनक कुण्डलों से अतिशय सुन्दर, भक्तों के अभिलषित मनोरथों को परिपूर्ण करने वाले कृपा के अगाध सागर सुभग स्वरूप भगवान् श्रीराम की अपने चित्त में भावना करते हैं।

(११)

पञ्चवटीद्रुमच्छायाप्राङ्गणे सीतया सह।
संस्थितं मञ्जुलं रामं वन्दे प्रणतिपूर्वकम्।।

पञ्चवटी-वट-पीपल आदि की सुन्दर शीतल छाया में श्रीसीताजी सहित विराजमान भगवान् श्रीराम को प्रणति पूर्वक अभिवन्दना करते हैं।

(१२)

भरतेन सशत्रुघ्न-लक्ष्मणेन सुसेवितम्।
सीतापतिश्च दिव्याभं राघवेन्द्रं स्मिताननम्।।

श्रीभरत-लक्ष्मण-शत्रुघ्न से सेवित दिव्य प्रभायुक्त मन्दहास्यमुखारविन्द सीतापति भगवान् श्रीराम की वन्दना करते हैं।

(१३)

अयोध्यादिव्यहर्म्ये च हेमसिंहासने स्थितम्।
सीतारामं सदा वन्दे निजसिंहासने स्थितम्।।

अयोध्या के दिव्य राजमहल में अपने समस्त परिकरों सहित स्वर्ण सिंहासन पर विराजमान भगवान् श्रीसीताराम की नित्यप्रति वन्दना करते हैं।

(१४)

अयोध्याराजमार्गे च द्विरदाऽऽरोहिणं भजे।
जानकीवल्लभं रामं मुनिवृन्दैः सदाऽर्चितम्॥

अयोध्यापुरी के राजमार्ग में हाथी पर अवस्थित सिंहासन पर विराजित मुनिवरों द्वारा सदा पूजित श्रीजानकीवल्लभ श्रीराम भगवान् की वन्दना करते हैं।

(१५)

सरयू-नीरधारायां तर्य्यासीनं जगत्पतिम्।
नमामि रामचन्द्रञ्च कृपा-कारुण्यसागरम्॥

पुण्य सलिला सरयू सरिता की जल की धारा में नौका पर विराजमान, इस सम्पूर्ण जगत् के अधिपति, कृपा-करुणा के सागर स्वरूप भगवान् श्रीरामचन्द्र को नमन करते हैं।

(१६)

दर्शनीयं दयालुञ्च कौशेयांऽशुकधारिणम्।
ललाटतिलकं मञ्जुं भावये राममद्भुतम्॥

रेशमी वस्त्र धारण किये हुए एवं अपने सुन्दर ललाट पर ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक से शोभित और परम दयालु अति दर्शनीय अद्भुत स्वरूप भगवान् श्रीराम की भावना करते हैं।

(१७)

महानन्दप्रदं रामं सौन्दर्यसिन्धुरूपकम्।
सीतया सह गच्छन्तं नौमि दशरथाऽऽत्मजम्॥

सुन्दरता के महासिन्धुरूप अतिशय आनन्द प्रदान करने

वाले श्रीसीताजी के संग पधारते हुए दशरथनन्दन भगवान् श्रीराम को अभिनमन करते हैं।

(१८)

भक्ताऽभीष्टप्रदं रामं निखिलाऽऽगमवर्णितम्।
चित्रकूटमहारण्ये विहरन्तं विभावये ।।

समस्त आगमादि शास्त्रों में जिनका वर्णन किया गया है और भक्तजनों के अभिलषित मनोरथों को प्रदान करने में तत्पर तथा चित्रकूट के गहन वन में विहार करते हुए भगवान् श्रीराम का अपने मानस में भावना करते हैं।

(१९)

सुग्रीवराज्यदातारं बालिसंहारकारकम्।
अनन्तशक्तिसम्पन्नं श्रीरामं भावयेऽनिशम्।।

महाबली भक्तराज श्रीसुग्रीव को राजसिंहासन पर आसीन करने वाले तथा परम बलशाली बाली का संहार करने में अग्रसर और स्वयं अनन्त शक्ति से परिपूर्ण भगवान् श्रीराम की निरन्तर अपने अन्तःकरण में भावना करते हैं।

(२०)

श्रेयःप्रदं वरेण्यञ्च श्रीरामं दीनवत्सलम्।
प्रपन्नरक्षणे दक्षं नतोऽस्मि मनसा गिरा।।

परम कल्याणकारी वरणीय स्वरूप दीनवत्सल शरणागत भक्तों की सर्वविध सुरक्षा करने में अतिकुशल ऐसे भगवान् श्रीराम को मन, वाणी से प्रणाम करते हैं।

(२१)

श्रीरामविंशतिश्चारु रामाऽङ्घ्रिभक्तिसम्प्रदा ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मिता ।।

भगवान् श्रीराम के चरणारविन्दों की भक्ति प्रदान करने वाली यह सुन्दर "श्रीरामविंशतिः" का प्रणयन श्रीसीताराम भगवान् का ही कृपाप्रसाद है।

श्रीरामचन्द्राष्टकम्

(१)

ब्रह्मेन्द्र-रुद्र-सुरवृन्दनिसेव्यमानं
राजीवलोचनमहो मुनिहार्दसेव्यम् ।
वेदादिशास्त्रवचनैरुपगीयमानं
श्रीरामचन्द्रमनिशं हृदि भावयामि ।।

ब्रह्मा-इन्द्र-शंकरादि देववृन्दों से परिसेवित एवं ऋषि-मुनीजनों द्वारा प्रपूजित, श्रुति-स्मृति-तन्त्र-पुराणादि शास्त्रों के दिव्य वचनों से प्रतिपादित, परम आश्चर्यमय राजीवलोचन भगवान् श्रीरामचन्द्र की अपने अन्तर्मानस में निरन्तर मङ्गलमयी भावना करते हैं।

(२)

सच्चापहस्तनलिनं स्मितमञ्जुरूपं

गन्धर्व-किन्नरगणैः सततं प्रगीतम् ।

आराध्यमानमखिलै र्निजभक्तवृन्दैः
श्रीरामचन्द्रमनिशं हृदि भावयामि

गन्धर्व-किन्नरादि देवगणों द्वारा जिनकी अनरत दिव्य स्तुति की जा रही है। अपने समस्त भक्तवृन्दों से आराधनीय एवं जिनके करकमलों में सुन्दर धनुर्वाण सुशोभित हैं, मन्दहास्ययुक्त मुखारविन्द से अतिकमनीय भगवान् श्रीरामचन्द्र को निज हृदयस्थल में धारण करते हैं।

(३)

सीतापतिं भरतभक्तिमुदं वरेण्यं
नित्यं परात्परतरं सरयूप्रतीरे ।
गच्छन्तमम्बुजकरं ऋतुराजकाले
श्रीरामचन्द्रमनिशं हृदि भावयामि ।।

अपने अनुज श्रीभरतलालजी की अनुपम भक्ति से अतिशय प्रमुदित हैं, जो परात्परपरतत्त्व परम वरणीय हैं तथा ऋतुराज वसन्त काल में पुण्य सलिला सरयू के सुभग तटप्रदेश में निज करारविन्दों में सुन्दर कमलपुष्प को धारण किये पधार रहे हैं ऐसे जानकीवल्लभ श्रीरामचन्द्र भगवान् की अपने मानस में भावनापूर्वक स्मरण करते हैं।

(४)

श्रेयः प्रदं दशरथात्मजमुत्तमाङ्ग-

मानन्दधाम वरद पवनात्मजेशम् ।

कारुण्यसिन्धुमसुरान्तकमाप्तमृग्यं
श्रीरामचन्द्रमनिशं हृदि भावयामि ।।

महाराज श्रीदशरथ के अग्रज आत्मज अर्थात् उनके बड़े सुपुत्र एवं प्राणियों के कल्याणणप्रद और आनन्द के धाम तथा प्रपन्नजनों के यथेष्ठ वर देने में तत्पर एवं पवनात्मज श्रीहनुमान्‌जी के स्वामी करुणा के अगाध सागर, निशाचरों के हनन करने में अभिरत तथा उत्तमश्लोक महापुरुषों द्वारा अनुष्ठेय ऐसे श्रीरामचन्द्रप्रभु को अपने चित्त में अवस्थित करते हैं।

(५)

सेवानुरक्तिरतलक्ष्मणभक्तिहृद्यं
सुग्रीवसेव्यमखिलेश्वरमग्रजञ्च ।
शत्रुघ्नभावमुदितं रसदिव्यसिन्धुं
श्रीरामचन्द्रमनिशं हृदि भावयामि ।।

सेवा में सर्वदा अनुराग पूर्वक अभिरत रहने वाले श्रीलक्ष्मणजी की निर्हैतुकी विमल भक्ति से अतिशय प्रसन्न और इसी प्रकार श्रीशत्रुघ्नजी के दिव्य भाव से अति प्रमुदित, आनन्द के अगाध सिन्धुस्वरूप राघवेन्द्र श्रीरामचन्द्र भगवान् को अपने हृत्प्रदेश में सश्रद्ध भावना करते हैं।

(६)

भक्तेप्सितप्रबलभक्तिरसप्रदञ्च
दिव्यातिदिव्य[illegible]हासम् ।

सच्चित्रकूटवनकुञ्जनिवासकारं
श्रीरामचन्द्रमनिशं हृदि भावयामि ।।

परम भावुक भक्तों द्वारा अभिलषित भक्तिरस को प्रदान करने में समुत्सुक, अतीव दिव्यतम नवीन स्वर्णहार से सुशोभित, अतिसुरम्य चित्रकूट के वनकुञ्जों में निवास करने वाले श्रीरामचन्द्र भगवान् का प्रतिपल अपने मन-मन्दिर में भावना करने में प्रवृत्त हैं।

(७)

स्वाराधनारतमुनीशवशिष्ठशिष्यं
वेदान्तशास्त्रप्रतिपादितदिव्यरूपम् ।
दुर्दान्तरावणविनाशकरं प्रसिद्धं
श्रीरामचन्द्रमनिशं हृदि भावयामि ।।

वेदादि प्रतिपादित स्वकीय आराधना में सतत अभिरत रहने वाले परम मुनीश्वर श्रीवशिष्ठजी के प्रमुख शिष्य स्वरूप, वेदान्तादि शास्त्रों में जिनका दिव्य स्वरूप निरूपित है, महादुर्दान्त असुराधिपति रावण के वध करने में जो अति प्रसिद्ध हैं ऐसे श्रीरामचन्द्र प्रभु का प्रतिक्षण अपने मानस में भावना करते हैं।

(८)

दिव्याम्बरादिपरिशोभितमञ्जुरूपं
श्रीजानकीप्रियतमं श्रुतितन्त्रवेद्यम् ।
गो-विप्र-साधुपरिरक्षणबद्धकक्षं
श्रीरामचन्द्रमनिशं हृदि भावयामि ।।

अतीव दिव्यतम पीतवस्त्रों के धारण करने से परम शोभायमान जिनका अनुपम स्वरूप है। श्रुति-तन्त्र-पुराणादि शास्त्रों से जिनके मंगलमय पावन स्वरूप का अवबोध होता है। गो-ब्राह्मण-साधुजनों के सर्वात्मना सुरक्षार्थ सर्वदा जो कटिबद्ध रहते हैं ऐसे श्रीजानकीवल्लभलाल श्रीरामचन्द्र भगवान् का सतत अपने हृदय में भावना पूर्वक अभिरत हैं।

(९)

रामचन्द्राष्टकं स्तोत्रं रामभक्तिप्रदायकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

जानकीजीवन भगवान् श्रीराम की अनन्य पराभक्तिप्रदायक यह श्रीरामचन्द्राष्टक स्तोत्र जिसकी रचना स्वयं हमारे द्वारा सम्पादित हुई है जो सभी के लिए हितकर होगी ऐसी भावना है।

श्रीरामरूपस्तवः

(१)

ऋषि-मुनिजनसेव्यं दिव्यरूपं वरेण्य-
मगणितगुणकोषं शास्त्रबोधाऽग्रगण्यम् ।
विपिनगमनतुष्टं जानकीवल्लभञ्च
निखिलनिगममन्त्रैरीडितं नौमि रामम् ।।

उत्तमश्लोक ऋषि-मुनियों द्वारा संसेवित, दिव्यस्वरूप एवं परम वरेण्य हैं और अनन्त गुणों के महान् कोष हैं तथा श्रुति-स्मृति-

सूत्र-तन्त्र-पुराणादि निखिल शास्त्रों के दिव्य ज्ञान में अतीव अग्रगण्य है। माता कैकेयी की भावनानुसार वनवास जाने के लिए जो परम सन्तुष्ट हैं। समस्त वेदों के मन्त्रों द्वारा जिनकी स्तुति की जाती है ऐसे जानकीवल्लभ भगवान् श्रीराम को अभिनमन करते हैं।

(२)

त्रिभुवनसुरवन्द्यं वायुपुत्रेण पूज्यं
रघुकुलतिलकञ्चस्वर्चितं भ्रातृवृन्दैः ।
दशरथतनयश्चारुप्रवीणं रणेषु
प्रणतरसिकभक्तै-र्वन्दितं नौमि रामम् ।।

त्रिलोक के समस्त देववृन्दों द्वारा जो अभिवन्दित हैं और पवनतनय श्रीहनुमान्‌जी से सम्पूजित एवं रघुकुल के परम भूषण-स्वरूप और अपने अनुज श्रीभरतजी-श्रीलक्ष्मणजी तथा श्रीशत्रुघ्नजी से परिपूजित। महायुद्ध स्थल में युद्ध करने में परम कुशल। शरणागत रसिक भक्तों द्वारा अभिवन्दित दशरथनन्दन भगवान् श्रीराम को सश्रद्ध नमन करते हैं।

(३)

सुभगमधुररूपं गीयमानं सुधीशै-
ररुणनलिननेत्रं चापहस्तं नरेशम् ।
धृतकुसुमसुमालं दीनबन्धुं परेशं
तिलकसुभगभालं नौमि रामं रमेशम् ।।

जिनका सुन्दर मधुर स्वरूप है, उत्तमोत्तम विद्वज्जनों द्वारा जिनके पावन चरित का गान किया जाता है। धनुष-बाण को धारण

किये हुए और सुगन्धित पुष्पों की माला से सुशोभित, अपने अति कमनीय ललाट पर ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक धारण से परम शोभायमान ऐसे परब्रह्म दीनबन्धु राजीवलोचन जानकीवल्लभ भगवान् श्रीराम को साष्टाङ्ग प्रणति समर्पित है।

(४)

अनुपमशुभगात्रं सीतया सार्द्धमीशं
सुललितगतिशीलं पीतकौशेयवस्त्रम्।
अनुगतसुखदाने सर्वदा ध्यानलीनं
बुधजनमुखगीतं नौमि रामं भवेशम्॥

जिनका अनुपम मङ्गलमय श्रीवपु है, सुन्दर पीत-वस्त्रों से अति शोभायुक्त एवं परम मनोहर रूप से पधारते हुए और शरणागत भक्तों को परमानन्द प्रदान करने में सदा ध्यानमग्न तथा विद्वज्जनों के मुखारविन्दों से जिनका दिव्य गुणगणों का परिवर्णन किया जाता है ऐसे सकल चराचर के परमेश्वर अपनी जनकनन्दनी श्रीसीताजी के साथ भगवान् श्रीराम को सर्वतोभावेन अभिनमन करते हैं।

(५)

रामरूपस्तवोऽयञ्च रामभक्तिप्रदायकः।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितः॥

राजीवलोचन नयनाभिराम भगवान् श्रीराम की दिव्य विमल भक्ति प्रदान करने वाला यह "श्रीरामरूपस्तव" उन्हीं कृपाधाम श्रीप्रभु के कृपाप्रसाद से यहाँ प्रस्तुत है।

श्रीराम - गीतिका

(१)

जयति राघवः कञ्जलोचनः

स्मरविमोहनो लक्ष्मणाग्रजः ।

अमितवैभवो शास्त्रवर्णितो

दशरथात्मजो मञ्जुविग्रहः ।।

राजीवलोचन, कामदेव को भी मोहित करने वाले परम सुन्दर, श्रीलक्ष्मणजी के ज्येष्ठ भ्राता, जिनका अपार वैभव है श्रुति-स्मृति-पुराणादि सभी शास्त्रों में जिनकी दिव्य महिमा परिवर्णन है और अतीव मनोहर स्वरूप है ऐसे दशरथकुमार रघुकुल शिरोमणि भगवान् श्रीराम की सर्वदा जय हो ।।१।।

(२)

जनकनन्दनीप्राणवल्लभः

पवनसूनुना नित्यपूजितः ।

जगति सर्वदा शान्तिदायकः

स्वटति शोभना रामराघवः ।।

श्रीजानकीजी के हृदय के सर्वस्व प्रियतम, पवनकुमार श्री हनुमान्जी से सर्वदा परिसेवित, इस सम्पूर्ण जगत् को सब समय परम शान्ति सुख प्रदान करने वाले मङ्गलमय स्वरूप राघव रूप भगवान् श्रीराम इस अयोध्यापुरी की सुरम्य धरा पर विचरण कर रहे हैं ।।२।।

(३)

मुनिजनै र्बुधै-र्ध्येयमीश्वरं

निखिलनायकं सृष्टिकारणम्

शरणरक्षणे तत्परं मुहु-
र्यतिवरैर्नुतं राममाश्रये ।।

उत्तमोत्तम ऋषि-मुनिजनों एवं वेदादि शास्त्रवेत्ता विद्वानों द्वारा अपने अन्तःकरण से ध्यान किये जाने वाले परमेश्वर, समस्त चराचर जगत् के अधीश्वर एवं सम्पूर्ण सृष्टि के मूल कारण स्वरूप और शरणागत भक्तजनों के सर्वविध सुरक्षार्थ निरन्तर तत्पर रहने वाले तथा योगी-यतिजनों द्वारा प्रणति पूर्वक नमन किये गये भगवान् श्रीराम का हम समग्रविधा समाश्रय लेते हैं ॥३॥

(४)

विधि-भवाऽर्चितं तापवारकं
यजनकर्मणि नित्यदा स्थितम् ।
द्विजपदाम्बुजाऽऽरक्षणे रतं
भरतभावितं राममाश्रये ।।

सृष्टि रचयिता श्रीब्रह्मदेव एवं भूतभावन चन्द्रमौलि आशुतोष शूलपाणि श्रीशंकर और इन्द्रादिदेवों द्वारा परिपूजित तथा यज्ञानुष्ठानादि सत्कर्मों में नित्यशः सुशोभित और उत्तम विप्रवृन्दों की सर्वतोभावेन सुरक्षा के लिए अभिरत एवं अपने अनुज श्रीभरतजी द्वारा की गई परिचर्या से अत्यन्त प्रभावित भगवान् श्रीराम का परम अवलम्बन लेना ही मानव जीवन की सर्वात्मना सार्थकता है ॥४॥

(५)

विपिनगामिनं चापहस्तकं

निशिचरान्तकं विष्णुरूपिणम् ।

कनकमौलिनं कृष्णकुन्तलं
भज सदा शुभं रामवल्लभम् ।।

माता कैकेयी की भावनानुसार जिन्होंने १४ वर्ष पर्यन्त वन प्रदेश में निवास किया और दिव्य धनुष वाण को अपने कमकमलों में धारण किये हुए जो साक्षात् विष्णु स्वरूप हैं श्यामल सुभग केशराशि से सुशोभित तथा स्वर्णमुकुट से परम मनोहर स्वरूप, निशाचरों के परिहार के लिए यमराज के सदृश रुद्ररूप अति मङ्गलकारी भगवान् श्रीरामवल्लभ का प्रतिपल भजन करना ही जीवन की चरितार्थता है ।।५ ।।

(६)

रससुधाप्रदं निर्जरैः स्तुतं
प्रियशुभाननं धेनुपालकम् ।
गहनचिन्तकं राजभूषणं
प्रभज सुन्दरं राममुत्तमम् ।।

अपने प्रपन्नजनों को आनन्द सुधा प्रदान करने वाले, समस्त देवताओं द्वारा स्तुति कये गये एवं जिनके श्रीमुखारविन्द की अति आह्लादकारी शुभप्रद शोभा है, गोमाताओं के सर्वविध रूप से परिपालन में सर्वदा तत्पर एवं अपने राजकार्य में बड़ी गहनता से चिन्तनपूर्वक उसका सम्पादन समाधान करने वाले, सम्पूर्ण राजाओं के परम शिरोमणि भूषण स्वरूप और उत्तमोत्तम दिव्य ज्ञान के आधार सुभग रूप भगवान् श्रीरामचन्द्र का सर्वप्रकार से भजन किया जाना चाहिए ।।६ ।।

(७)

कुसुममालया शोभितो मुहुः
सुमरयूथके सीतया सह ।

सकलसाधुभिः सेवितो वरो
मुदितचेतसा याति राघवः ।।

सब समय सुगन्धित पुष्पमालाओं से अतीव शोभायमान एवं अत्यन्त मनोहर श्रीसरयू के पावन पुलिन पर जगज्जननी श्रीजानकी के साथ और समस्त रसिक भावुक सन्तजनों से परिसेवित सुन्दर स्वरूप प्रसन्न मन से रघुकुल आदर्शरूप भगवान् श्रीराम विहरण कर रहे हैं।।७।।

(८)

नवलनीरदश्यामविग्रहः
कनककुण्डला रामशोभनः ।
लव-कुशाधिपो विश्वपालको
व्रजति भारते भानुवंशजः ।।

नवीन मेघ के सदृश जिनका श्यामल स्वरूप है, स्वर्ण के कुण्डलों से विभूषित, परम बलशाली श्रीलव-कुश के परम पितृरूप, समस्त चराचरात्मक विश्व के परिपालक सूर्यवंशी भारतवर्ष की सुरम्य अतिपावन धराधाम पर अतिशय सुन्दराङ्ग भगवान् श्रीराम विहार कर रहे हैं।।८।।

(९)

श्रीरामगीतिका रम्या पठनाद्भक्तिदायिनी ।
राधासर्वेश्वरराद्येन शरणान्तेन निर्मिता ।।

यह श्रीराम-गीतिका अतिशय सुन्दर है, इसके अनुशीलन से भगवान् श्रीराम के चरणारविन्दों की अनन्य भक्ति प्राप्त होती है और उन्हीं भगवान् श्रीराम के प्रेरणा स्वरूप यह भक्तों के हितार्थ प्रस्तुत हुई है।

(१)

राम राम रटते रहो, जय जय सीताराम।
कृपा रूप श्रीराम है, ''शरण'' परम अभिराम।।

(२)

जनकनन्दनी जानकी, रघुकुल राघव राम।
युगलरूप विचरत सुभग, ''शरण'' अयोध्या धाम।।

(३)

सरयू सुन्दर पुलिन पर, विहरत सीताराम।
पवनतनय सेवा निरत, ''शरण'' रहत अविराम।।

(४)

दशरथनन्दन राम हैं, अतिशय कृपानिधान।
सुरगण परिसेवित सदा, ''शरण'' देत वरदान।।

(५)

जो शरणागत राम के, भजत सदा श्रीराम।
जीवन उसका सुभग है, ''शरण'' सुभग सब काम।।

(६)

जयति सदा जय राम की, जय जय श्रीहनुमान।
उचरत अतिप्रिय नामशुभ, ''शरण'' होत कल्यान।।

(७)

वाणी में असमर्थता, वर्णन किसविध होय।

राघव कृपाप्रसाद से, ''शरण'' सहज सब कोय।।

(८)

भरत-लखन अथ शत्रुघन, सेवा रत श्रीराम।
तीन अनुज हैं राम के, ''शरण'' रटो हिय धाम।।

(९)

जय जय बोलो राम की, रटो सदा शुभ नाम।
भाव भरित होकर सदा, ''शरण'' रहो निष्काम।।

(१०)

जो जन श्रीरघुनाथ का, गाता गुण अविराम।
वह श्रीहरि का पात्र है, ''शरण'' सुखी हिय धाम।।

(११)

पुरी अयोध्या धाम है, जहाँ सुशोभित राम।
सरयू पावन पुलिन पर, ''शरण'' मिलहि विश्राम।।

(१२)

अवसर बीता जा रहा, भजिये सीताराम।
परम कृपामय श्रीप्रभु, ''शरण'' कृपा निष्काम।।

(१३)

चलो अयोष्या धाम शुभ, जहाँ दरश भगवान।
जनकसुता श्रीरामजी, ''शरण'' सुशोभित जान।।

(१४)

अनुपम शोभा राम की, मधुर मनोहर नाम।

ऋषिजन मुनिजन रटत नित, ''शरण'' सदा निष्काम।।

(१५)

चैत्र सुद शुभ नवमी दिन, राम जयन्ती जान।
रसिक सन्तजन मुदित मन, ''शरण'' बधाई गान।।

(१६)

राम बधाई मधुरतम, सब मिलि गावो आज।
तुरइ बाजत सरस प्रिय, ''शरण'' सुमंगल काज।।

(१७)

युगलरूप श्रीरामप्रभु, अतिप्रिय सीताराम।
कनक सिंहासन है सुभग, ''शरण'' विराजत ठाम।।

(१८)

कौशल्यानन्दवर्द्धन, राघवेन्द्र प्रभु राम।
इनका चिन्तन सतत हो, ''शरण'' पूर्ण जन काम।।

(१९)

राम नाम अति मधुरतम, संकीर्तन नित गान।
आधि-व्याधि सब शमन हो, ''शरण'' निरामय जान।।

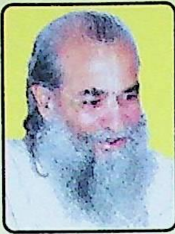
(२०)

जागतिक व्याधि प्रबल है, जन-मन कष्ट महान।
रामचन्द्र प्रभु शरण हो, ''शरण'' शान्ति सुख मान।।

(२१)

सुन्दर प्रभातकाल में, ध्यान करउ प्रभु राम।

निश्चय मानस पटल पर, ''शरण'' भक्ति अविराम।।



अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज का जन्म विक्रम संवत 1986 वैशाख शुक्ल 1 शुक्रवार तदनुसार दिनांक 10 मई, 1929 को निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) में हुआ। अपकी माताश्री का नाम स्वर्णलता (सोनीबाई) एवं पिताश्री का नाम श्रीरामनाथजी शर्मा गौड़ इन्दोरिया था। आप जैसे नक्षत्रधारी महापुरुष के जन्म से यह विप्र वंश धन्य हुआ है। आपश्री 11 वर्ष की अल्पावस्था में वि.सं. 1997 आषाढ़ शुक्ल 2 रविवार (रथयात्रा) के शुभावसर पर अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज से वैष्णवी दीक्षा से दीक्षित होकर पीठ के उत्तराधिकारी नियुक्त हुए। वि.सं. 2000 में पूज्य गुरुदेव के गोलोकवास होने पर 14 वर्ष की अवस्था में ज्येष्ठ शुक्ल 2 शनिवार दिनांक 5 जून 1943 को आचार्यपीठ पर आसीन हुए। तदनन्तर 4 वर्ष तक श्रीधाम वृन्दावन में न्याय-व्याकरण-वेदान्त आदि शास्त्रों का अध्ययन किया। वज्रविदेही चतुःसम्प्रदाय श्रीमहन्त श्री धनञ्जयदासजी काठिया बाबा महाराज तर्क-तर्कतीर्थ जैसे महानुभावों का आपको संरक्षण प्राप्त हुआ। आपश्री के आचार्यत्वकाल में वैष्णव चतुःसम्प्रदायों के आचार्यों, श्रीमहन्तों, सन्त महात्माओं, समस्त शंकराचार्यों श्रीकरपात्रीजी महाराज, महामण्डलेश्वरों, देश के मूर्धन्य मनीषियों, राजा-महाराजाओं, राजनेताओं के साथ निकटतम घनिष्ठ सम्पर्क बढ़ा। श्री निम्बार्क सम्प्रदाय का चतुर्दिक् विस्तार हुआ। वि.सं. 2001 में आपश्री ने 15 वर्ष की अवस्था में कुरुक्षेत्र के विराट् साधु सम्मेलन में जगद्गुरु पुरीपीठाधीश्वर श्रीभारतीकृष्णतीर्थजी महाराज के तत्त्वावधान में अध्यक्ष पद को अलंकृत किया।

आपश्री के कार्यकाल में तीनधाम सप्तपुरी की यात्रा सम्पन्न हुई। प्रयाग, हरिद्वार (वृन्दावन), उज्जैन, नासिक इन चारों स्थानों के कुम्भ पर्वों पर अनेकशः श्रीनिम्बार्कनगर में समायोजित धार्मिक अनुष्ठानों, धर्माचार्यों के सदुपदेशों, विविध सम्मेलनों द्वारा समग्र जन समुदाया को सन्मार्ग की ओर प्रेरित किया जाता है। इसी प्रकार सं. 2026 में वज्रयात्रा, 2031 में विराट् सनातन धर्म सम्मेलन, 2047 में श्रीमुरारी बापू की रामकथा, 2050 में स्वर्ण जयन्ती समारोह के अवसर पर अ.भा. विराट् सनातन धर्म सम्मेलन, 2061 में श्री भगवन्निम्बार्काचार्य 5100वां जयन्ती महोत्सव पर विराट् सनातनधर्म सम्मेलन, 2062 में युगसन्त श्रीमुरारीबापू द्वारा श्रीरामकथा, 2063 में श्रीरमेश भाई ओझा द्वारा श्रीमद्भागवत कथा आदि आयोजनों द्वारा जो धार्मिक चेतना जन-जन में स्फुरित करायी गयी वह सदा स्मरणीय है। प्रत्येक अधिकमास में आचार्यपीठ पर आयोजित होने वाले अष्टोत्तरशतभागवत, यज्ञानुष्ठान, प्रवचन श्रीरासलीलानुकरण आदि कार्यक्रम भी सदा प्रेरणाप्रद रहते हैं। आप द्वारा प्रतिदिन किया जाने वाला श्रीयुगलनाम-संकीर्तन भी श्रवणीय होता है। सन् 1966 में दिल्ली के विराट् गो-रक्षा सम्मेलन में आपश्री का सपरिकर पादार्पण हुआ था। इस अवसर पर स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज एवं अन्य धर्माचार्यों से जो महनीय विचार विमर्श हुआ वह परम ऐतिहासिक है।

आपश्री ने अपने आचार्यत्व काल में जितना देश-देशान्तरों में सम्प्रदाय का वर्चस्व बढ़ाया है उतना ही देवालयों के निर्माण, जीर्णोद्धार, शैक्षणिक संस्थाओं का निर्माण-संचालन, साहित्य प्रकाशन, नूतन ग्रन्थ रचना, गोशाला, मुद्रणालय आदि संस्थाओं द्वारा आचार्यपीठ का सर्वतोभावेन विकास किया है। आपश्री द्वारा रचित 37 ग्रन्थों में से भारत-कल्पतरु ग्रन्थ का विमोचन भारत के उपराष्ट्रपति श्रीशंकरदयालजी शर्मा ने दिल्ली में किया। इसी प्रकार आपके अन्य ग्रन्थों का मूर्द्धन्य राजनेताओं, शीर्षस्थ महापुरुषों, जगद्गुरुओं द्वारा विमोचन समारोह सम्पन्न हुये हैं। एवं आप द्वारा प्रणीत रचनाओं पर तीन-चार शोधप्रबन्ध भी प्रस्तुत हुए हैं जो मननीय हैं। अस्वस्थ अवस्था में भी आप निरन्तर क्रियाशील रहते है। आपश्री का संरक्षण पाकर और आपश्री के महान् व्यक्तित्व व कृतित्व से श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय किंवा सनातन धर्म जगत् विशेषतः उपकृत हुआ है। आपके मधुर दर्शन की एक झलक पाने और आपश्री के वचनामृत सुनने के लिए धार्मिक जन सदा समुत्सुक रहते हैं।